Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

चम्पारण के पुरातात्विक अवशेषों का विश्लेषण : एक अध्ययन

कुमारी दीपा
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

Article Info
Volume 5, Issue 2
Page Number : 40-44

Publication Issue :
March-April-2022

Article History
Accepted : 10 March 2022
Published : 30 March 2022

मुख्य भाव : महाकाव्य से लेकर आज तक चम्पारण का इतिहास गौरवपूर्ण एवं महत्वपूर्ण रहा है। पुराण में वर्णित है कि यहाँ के राजा उत्तानपाद के पुत्र भक्त ध्रुव ने यहाँ के तपोवन नामक स्थान पर ज्ञान प्राप्ति के लिए घोर तपस्या की थी। एक और चम्पारण की भूमि देवी सीता की शरणस्थली होने से पवित्र है वहीं दूसरी और आधुनिक भारत में गाँधीजी का चम्पारण सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास का अमूल पन्ना है। राजा जनक के समय यह मिथिला (तिरहुत) प्रदेश का अंग था। लोगों का ऐसा विश्वास है कि जानकीगढ़ जिसे चानकीगढ़ भी कहा जाता है, राजा जनक के मिथिला प्रदेश की राजधानी थी जो बाद में छठी सदी ईसापूर्व में वज्जी के साम्राज्य का हिस्सा बन गया। भगवान बुद्ध ने यहाँ अपना उपदेश दिया था जिसकी याद में तीसरी सदी ईसापूर्व में प्रियदर्शी अशोक स्तम्भ लगवाए और स्तूप का निर्माण कराया। गुप्त वंश तथा पाल वंश के पतन के बाद चम्पारण कर्नाट वंश के अ धीन हो गया मुसलमानों के अधीन होने तक तथा उसके बाद भी यहाँ स्थानीय क्षत्रपों का सीधा शासन रहा। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय चम्पारण के ही एक रैयत एवम् स्वतंत्रता सेनानी राजकुमार शुक्ल के

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

बुलावे पर महात्मा गाँधी अप्रैल 1916 ई0 में मोतिहारी आए और नील की फसल के लागू तीनकठिया खेती के विरोध में सत्याग्रह का पहला सफल प्रयोग किया। आजादी के लड़ाई में यह नए चरण की शुरूआत थी। बाद में भी बापू कई बार यहाँ आए। अंग्रेजों ने चम्पारण को सन् 1966 में ही स्वतंत्र इकाई बनाया था। लेकिन 1971 में इसका विभाजन कर पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण बना दिया गया।

बिहार प्राचीनकाल से भारत की सांस्कृतिक, अध्यात्मिक एवं राजनीतिक विरासत का मेरूदण्ड रहा है। भौगोलिक दृष्टिकोण से चम्पारण बिहार के तिरहुत कमिश्नरी के उत्तर–पश्चिमी छोर, भारत–नेपाल सीमा अवस्थित है। चम्पारण की यह भूमि सदैव से ही बिहार की हृदयस्थली रही है। चम्पारण के सांस्कृतिक विरासत के साक्ष्य उसके पुरावशेष हैं। वैसे तो यहाँ रामायणकालीन, महाभारतकालीन भी अवशेष हैं। लेकिन इस शोध कार्य में बौद्धकाल से हर्षवर्धनकाल तक के पुरावशेषों का अध्ययन करना है जिनमें मुख्य हैं केसरिया बौद्ध स्तूप, सागरडीह स्तूप, लौरिया, अरेराज अशोक स्तम्भ, लौरिया नंदनगढ़, स्तूप, लौरिया शीर्ष सिंह स्तम्भ, रामपुरवा अशोक स्तम्भ जानकीगढ़, सुभद्रा स्थान का अष्टकोणिय कुँआ तथा सोफा मंदिर आदि।

महात्मा बुद्ध लंबे अंतराल के बाद अपनी मृत्यु के पूर्व वैशाली से कुशीनगर जाते समय चम्पारण होते हुए गए थे। बिहार के पश्चिमी चम्पारण जिले के जिला मुख्यालय बेतिया से करीब 29 किलोमीटर की दूरी पर स्थित लौरिया नंदनगढ़ या इसके आसपास के लोगों का मानना है कि उनकी राख या उनके अंतिम संस्कार से लिया गया चारकोल यहीं किसी स्तूप में रखा है। स्तूप व स्तंभ चौथी शताब्दी ई. पूर्व में मौर्य सम्राट अशोक के शासनकाल के 21 वें वर्ष में बनाया गया था। इन स्तंभों में उस राजवंश के अभिलेख और स्मारक आज भी मौजूद हैं। बता दें कि उस जमाने में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा स्थापित स्तंभ को 'लौर' कहा गया।

और उस 'लौर' के 100 गज करीब पड़ोस में जो भी गाँव या कस्बा हो, उसे 'लौरिया' के नाम से जाना जाता है।

राजा अशोक ने पाटलिपुत्र (पटना) से अपनी तीर्थयात्रा शुरू की और वे चम्पारण जिले के केसरिया गाँव, लौरिया अरेराज व लौरिया नंदनगढ़ से गुजरते हुए रामपुरवा गाँव गए। इन सब स्थानों में राजा अशोक ने ही स्तूप स्तंभ (लौर) बनवा दिया था। बता दें कि उस समय नेपाल भी मगध राज्य में सम्मिलित था और प्रायः सभी राज्य कर्मचारियों को उसी रास्ते और इसी मार्ग से यात्रा करते थे। चीनी यात्री फाहियान तथा ह्यु एन सांग दोनों ने ही इन स्थानों का उल्लेख किया है।

केसरिया

ब्रिटिश पुरातत्वविद् अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1861 में पूर्वी चम्पारण स्थित इस केसरिया स्थल का दौरा किया पहली बार इन्होंने ही इस टीलेनुमा स्तूप की खोज करने का दावा किया, जिसे स्थानीय रूप से रानीवास के रूप में जाना जाता था, लेकिन खुदाई में इसके बौद्ध धर्म से जुड़े होने के हर तरह के प्रमाण मिले। हालांकि कनिंघम के पहले 1814 में कर्नल कोलीन मैकेन्जी (1754–8 मई, 1821) भी इस ऐतिहासिक धरोहर की चर्चा कर चुके थे। वहीं खुद कनिंघम की रिपोर्ट बताती है कि पर्वतारोही बी.एच. हॉजसन को भी इस धरोहर का पता था। 1835 में जेम्स प्रिन्सेप के जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल ने हॉजसन की एक रिपोर्ट को प्रकाशित किया था।

रामपुरवा :

पश्चिम चम्पारण जिले के बिल्कुल उत्तर भाग में गौनाहा से कुछ दूर पिपरिया गाँव के पास यह एक गाँव है। यहाँ अशोक के दो खंडित स्तंभ हैं, जो जमीन पर खड़े होने के बजाए पड़ी हुई अवस्था में हैं। इस स्तंभ की चोटी पर का व्यास 26.25 इंच है। ठीक यही व्यास लौरिया नंदनगढ़ के स्तंभ की चोटी का भी है। इसकी कलगी पर दाना चुगते हुए हंसों की पंक्ति चित्रित है। एक स्तम्भ के ऊपर सिंह की मूर्ति थी, वही दूसरे के ऊपर बैल की। सिंह वाली मूर्ति कलकत्ता के

इंडियन म्यूजियम में तो वहीं बैल की बनी हुई मूर्ति इन दिनों देश की राजधानी दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में रखी गई है।

संदर्भ सूची :

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, चंपारन में महात्मा गांधी, चतुर्थ संस्करण, (पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, 1998), 4.
2. श्रीहवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', बौद्धधर्म और बिहार, (पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, 1960), 5.
3. L.S.S. O' Malley, Bengal District Gazetteers: CHAMPARAN, (Calcutta: The Bengal Secretariat Book Depot, 1907), 16.
4. त्रिपाठी, बौद्धधर्म और बिहार, 42.
5. O' Malley, 'Bengal District Gazetteers: CHAMPARAN', 16.
6. Samuel Beal, Buddhist Records of the Western World, First published by Trubner & Co., London, 1984, (Delhi: Orient Books Reprint Corporation, 1984), 64.
7. O' Malley, Bengal District Gazetteers: CHAMPARAN, 17.
8. Bengal Asiatic Society's Journal, 1835 cited in Archeological Survey of India, Four Reports made during the Years 1862-65, by Alexander Cunningham, Volume 1, (Simla: Government Central Press, 1871), 64.
9. वही, 64.
10. Archeological Survey of India (ASI), Four Reports made during the Years 1862-65, by Alexander Cunningham, Volume 1, (Simla: Government Central Press, 1871), 65.
11. Reports, Archaeological Survey, Bengal Circle, 1901-02 cited in L.S.S. O' Malley, 'Bengal District Gazetteers: CHAMPARAN', (Calcutta The Bengal Secretariat Book Depot,1907), 160.
12. Malley, 'Bengal District Gazetteers: CHAMPARAN', 160.
13. ASI, Four Reports made during the Years 1862-65, 68.

14. गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ विद्यालंकार, 'बिहार के दर्शनीय स्थान', (बांकीपुर: ग्रंथमाला कार्यालय, 1940), 85.
15. Dr. Parmeshwari Lal Gupta, Gangetic Valley Terracotta Art, (Varanasi: Prithvi Prakashan, 1972), 24.
16. अम्बष्ठ, गदाधर प्रसाद. बिहार के दर्शनीय स्थान. बांकीपुर: ग्रंथमाला कार्यालय, 1940.
17. प्रसाद, राजेन्द्र. चंपारन में महात्मा गांधी, चतुर्थ संस्करण. पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, 1998.
18. त्रिपाठी, श्रीहवलदार. बौद्धधर्म और बिहार. पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, 1960.